शोध-सारांश

आज भारतीय समाज में सांप्रदायिकता ने गहरे में अपनी जगह बना ली है। सांप्रदायिक दुष्प्रचार से यह लोगों की सामान्य चेतना का हिस्सा बनती जा रही है। आम लोग स्वभावतः ऐसी प्रतिक्रिया करते हैं जो सांप्रदायिकता को मान्यता देती है। उनको इसमें कुछ भी गलत नहीं लगता, सबसे ज्यादा चिंता की बात यही है कि वे इसे धर्म-प्रेम, देश-प्रेम, राष्ट्र-प्रेम, संस्कृति-प्रेम व इतिहास-प्रेम के नाम पर करते हैं। वर्तमान में सांप्रदायिकता मात्र दो धर्मों के बीच विवाद, झगड़ों व हिंसा की घटनाओं का ही नाम नहीं रह गया है, यह दो धार्मिक समुदायों के विवादों तक सीमित नहीं बल्कि इसने एक विचारधारा का रूप धारण कर लिया है, अपनी एक तर्क-पद्धति विकसित कर ली है जिसके आधार पर यह समाज के विभिन्न पक्षों पर विचार करती है। सांप्रदायिकता के आधार पर भारत का विभाजन हिंदुस्तान के इतिहास की सबसे बड़ी त्रासदी है। स्वतंत्रता से पूर्व व स्वतंत्रता के बाद भी सांप्रदायिकता हमेशा उच्च-वर्ग के हितों की सेवा करने का औजार रही है। समाज के सामान्य लोगों के दुख-दर्द से सांप्रदायिकता का कोई लेना-देना नहीं है।

आज सांप्रदायिकता अधिक हिंसक व बर्बर हो उठी है। 1936 से पूर्व जो सांप्रदायिकता अपने उदार रूप के लिए जानी जाती थी वह अब अपने फासिस्ट रूप के कारण अधिक चर्चा व चिंता का विषय बन गई है। सांप्रदायिकता के इसी आधुनिक रूप की झलक गीतांजलि श्री कृत **'हमारा शहर उस बरस'** व तसलीमा नसरीन कृत **'लज्जा'** में देखने को मिलता है। दोनों उपन्यासों में सांप्रदायिकता के आधुनिक रूप के साथ-साथ उसके प्रभाव को सहज ही देखा जा सकता है। गीतांजलि श्री जहाँ अपनी

रचना 'हमारा शहर उस बरस' में भारत में आये दिन होने वाली सांप्रदायिक हिंसा में कट्टर हिंदू व धार्मिक संघठनों की भूमिका को रेखांकित करती हैं वहीं तसलीमा नसरीन अपनी कृति 'लज्जा' में बंगलादेश में निर्दोष हिन्दुओं पर कट्टर मुस्लिमों द्वारा किये जा रहे सांप्रदायिक आतंक का बड़ी बेबाकी से चित्रण करती हैं।

प्रस्तुत शोध में दोनों उपन्यासों के अलोक में आधुनिक सांप्रदायिकता को देखने व समझने की कोशिश की गई है। आज की सांप्रदायिकता धर्म के राजनीतिकरण व सांप्रदायिक संगठन व राजनीतिक दलों के गठजोड़ का परिणाम है। सांप्रदायिकता के अवधारणा अध्ययन विश्लेषण के साथ-साथ वर्तमान सांप्रदायिकता के निर्माण में धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक व अन्य कारक तत्वों में आर्थिक व इतिहास के प्रति मिथ्या बोध की बड़ी भूमिका देखने को मिली। धर्म, समाज और राजनीति आपस में इतने गहरे में जुड़े हुए हैं कि सांप्रदायिकता निर्माण में किसी एक की भूमिका को स्वतंत्र रूप में नहीं समझा जा सकता। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि मौजूदा सांप्रदायिकता अपने पूर्व के स्वरूप से भिन्न व उग्र है। सांप्रदायिकता व्यक्ति के मानस पर हावी हो उसे धर्म, जाति, क्षेत्र व संस्कृति के नाम पर भ्रमित करती है इसलिए शिक्षित वर्ग भी सांप्रदायिकता से लड़ते-लड़ते अक्सर सांप्रदायिक हो उठता है। शोध के केंद्र में वर्तमान सांप्रदायिकता के स्वरूप व उसके परिणाम पर प्रकाश डालते हुए हिंदू व मुस्लिम सांप्रदायिकता का तुलनात्मक अध्ययन में पाया गया कि भारत में जहाँ हिंदू सांप्रदायिकता अपने उग्रता के चरम पर है वहीं भारत के इतर इस्लामिक देशों में मुस्लिम सांप्रदायिकता अपनी पाशविकता के चरम पर है।

निष्कर्ष के तौर पर देखें तो हम पाते हैं कि 'हमारा शहर उस बरस' में जहाँ हिंदू सांप्रदायिकता की बर्बरता व मनोविज्ञान का चित्रण हुआ है वहीं 'लज्जा' में मुस्लिम सांप्रदायिकता अपने अधिक क्रूर व हिंसक रूप में दिखाई पड़ती है। तुलनात्मक रूप में मुस्लिम सांप्रदायिकता, हिंदू सांप्रदायिकता की अपेक्षाकृत अधिक बर्बर व हिंसक है। चूँकि सांप्रदायिकता आज विचारधारा में परिणत हो चुकी है इसलिए इससे विचारधारा के स्तर पर ही पार पाया जा सकता है।